श्री कामाक्षी स्तोत्रं - 2

मंगल चरणे मंगल वदने मंगलदायिनि कामाक्षी ।
गुरु गुह जननी कुरु कल्याणं कुंजरि जननी कामाक्षी ॥ 1

कष्ट निवारिणि इष्ट विदायिनि दुष्ट विनाशिनि कामाक्षी ।
गुरु गुह जननी कुरु कल्याणं कुंजरि जननी कामाक्षी ॥ 2

हिमगिरितनये मम हृदिनिलये सज्जनसदये कामाक्षी ।
गुरु गुह जननी कुरु कल्याणं कुंजरि जननी कामाक्षी ॥ 3

ग्रहनुत चरणे गृहसुतदायिनि नव नव भवते कामाक्षी ।
गुरु गुह जननी कुरु कल्याणं कुंजरि जननी कामाक्षी ॥ 4

शिवमुख विनुते भवसुखदायिनि नव नव भवते कामाक्षी ।
गुरु गुह जननी कुरु कल्याणं कुंजरि जननी कामाक्षी ॥ 5

भक्त सुमानस ताप विनाशिनि मंगलदायिनि कामाक्षी ।
गुरु गुह जननी कुरु कल्याणं कुंजरि जननी कामाक्षी ॥ 6

केनोपनिषद् वाक्य विनोदिनि देवि पराशक्ति कामाक्षी ।
गुरु गुह जननी कुरु कल्याणं कुंजरि जननी कामाक्षी ॥ 7

© 2022 Vedam Nadam

परशिव जाये वरमुनि भाव्ये अखिलांडेश्वरि कामाक्षी ।
गुरु गुह जननी कुरु कल्याणं कुंजरि जननी कामाक्षी ॥ 8

हरिद्रा मंडलवासिनि नित्य मंगलदायिनि कामाक्षी ।
गुरु गुह जननी कुरु कल्याणं कुंजरि जननी कामाक्षी ॥ 9

॥ इति श्रीश्रीश्रीजगद्गुरु चंद्रशेखरसरस्वती विरचितं
श्रीकामाक्षीस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

© 2022 Vedam Nadam